No. of Printed Pages : 5

MHD–11

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिंदी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
एम.एच.डी.-11 : हिन्दी कहानी

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) रेलवे लाइन की बगल से बैलगाड़ी की कच्ची सड़क गयी है दूर तक। हिरामन कभी रेल पर नहीं चढ़ा है। उसके मन में फिर पुरानी लालसा झाँकी, रेलगाड़ी पर सवार होकर, गीत गाते हुए जगरनाथधाम जाने की लालसा। ..... उलटकर अपने खाली टम्पर की ओर देखने की हिम्मत नहीं होती है।

पीठ में आज भी गुदगुदी लगती है। आज भी रह-रहकर चम्पा का फूल खिल उठता ह, उसकी गाड़ी में। एक गात की टूटी कड़ी पर नगाड़े का ताल कट जाता है बार-बार! ..... उसने उलटकर देखा, बोरे भी नहीं, बाँस भी नहीं, बाघ भी नहीं। ..... परी ..... देवी ..... मीता ..... हीरादेवी। महुआ-घटवारिन-कोई नहीं। मरे हुए महूर्तों की गूँगी आवाजें मुखर होना चाहती हैं। हिरामन के होंठ हिल रहे हैं। शायद वह तीसरी कसम खा रहा है - कम्पनी की औरत की लदनी।

(ख)ग्रीज और तेल लगा हुआ सामान उठाने के कारण हाथ गन्दगी से भर गए थे। साइरन की आवाज उसके कानों में पड़ी, तब उसने काम बन्द किया। ऐसा लगता था कि साइरन यदि किसी कारण से न बजता, तो वह उसी प्रकार यंत्रवत् काम करता रहता। साथी कामगार हाथ धोकर कपड़े पहन रहे थे। जल्दी-जल्दी में उसने दोनों हाथ कैरोसीन तेल

में धो डाले। साबुन का डिब्बा टटोलकर देखा तो वह खाली था। भूमि पर से थोड़ी मिट्टी उठाकर वह नल की ओर चल दिया। पिछले तीन–चार महीनों की नौकरी में आज वह पहली बार मिट्टी से हाथ धो रहा था। भुरभुरी मिट्टी को पानी के साथ लगाकर उसने हाथों में मला और फिर दोनों हाथ नल के नीचे लगा दिए। पानी के साथ मिट्टी को पतली पर्त भी बह चली। दूसरी बार मिट्टी लगाने से पहले उसने हाथों को सूँघा और अनुभव किया कि हाथों की गंध मिट चुकी है। सहसा एक विचित्र आतंक से उसका समूचा शरीर सिहर उठा।

(ग) ऊपर खिड़कियों में चेहमेगोइयाँ तेज हो गयीं कि अब दोनों आमने–सामने आ गए हैं तो बात जरूर खुलेंगी ..... फिर हो सकता है, दोनों में गाली–गलौज भी हो । अब रक्खा गनी को हाथ नहीं लगा सकता। अब वे दिन नहीं रहे। ..... बड़ा मलबे का मालिक बनता था। असल में मलबा न इसका है न गनी का। मलबा तो सरकार की

मलकियत है, मरदूद किसी को वहाँ गाय का खूँटा तक नहीं लगाने देता। मनोरी भी डरपोक है। इसने गनी को बता क्यों नहीं दिया कि रक्खे ने ही चिराग और उसके बीबो–बच्चे को मारा है। ..... रक्खा आदमी नहीं साँड है। दिनभर साँड की तरह गली में घूमता है। ..... गनी बेचारा कितना दुबला हो गया है।

(घ) अगली सुबह सावित्री घर में नहीं थी और राजदेव को लग रहा था, हथेली के वे आँसू सूखे नहीं हैं। वह जगह अभी भी भीगी हुई है। वह बार–बार उस स्थान को अपनी आँखों से स्पर्श कराता और भावुक हो जाता। अपने बाल नोंचता और फुसफुसाता 'मैं पापी ..... मैं पापी .....।' वह अपने कमरे में घुसता तो सूना महसूस करता। हालांकि सभी कुछ उसी तरह था, केवल एक बक्सा नहीं था पर लगता ऐसा था कि कमरे की छत कुछ नीचे खिसक आई है और कोई दोवार कम हो गई है।

2. 'बिरादरी' कहानी की समीक्षा कीजिए। 10

3. 'राजा निरबंसिया' के जगपती का चरित्र-चित्रण कीजिए। 10

4. 'स्विमिंग पूल' कहानी में उद्‌भासित यथार्थ को स्पष्ट कीजिए। 10

5. 'गौरेया' कहानी की मूल संवदेना पर विचार कीजिए। 10

6. 'हरी बिन्दी' में चित्रित स्त्री-दृष्टि को व्यक्त कीजिए। 10

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क)'डिप्टी कलक्टरी' की संवेदना

(ख)'मलबे का मालिक' का प्रतीकार्थ

(ग)'ड्राइंग रूम' का कथासार

(घ)'सुख' कहानी के 'भोला बाबू'